

धर्मसिद्धान्तात्मक धर्मविज्ञान क्या है?

धर्मविज्ञान के बारे में प्रश्न

डोगमैटिक अर्थात् धर्मसिद्धान्तात्मक धर्मविज्ञान का नाम यूनानी और लैटिन शब्द डोगमा अर्थात् धर्मशिक्षा से मिलता है, जिसका अर्थ धर्मविज्ञान को उद्धृत करते समय, "धर्मसिद्धान्तों का सिद्धान्त का एक समूह जिसकी औपचारिक और आधिकारिक रूप से पुष्टि की जाती है" से है। मूल रूप से, धर्मसिद्धान्तात्मक धर्मविज्ञान आधिकारिक या "धर्मसिद्धान्तात्मक" धर्मविज्ञान को सन्दर्भित करता है, जिसे कि एक संगठित कलीसियाई देह, जैसे रोमन कैथोलिक कलीसिया, डच रिफोर्मड अर्थात् धर्मसुधारित कलीसिया, इत्यादि के द्वारा मान्यता प्राप्त है।

माना जाता है कि शब्द 1959 में पहली बार एल. रेनहार्ड के द्वारा लिखी गई पुस्तक के शीर्षक में दिखाई दिया था, यह शब्द धर्मसुधार के पश्चात् अधिक व्यापक रूप से उपयोग किया जाने लगा और कलीसिया के आधिकारिक रूप से तैयार किए गए विश्वास के लेखों को नियुक्त करने के लिए इसका उपयोग किया गया था। धर्मसिद्धान्तात्मक धर्मविज्ञान का एक अच्छा उदाहरण धर्मसैद्धान्तिक कथन या अंगीकार है, जिन्हें आरम्भिक कलीसियाई परिषदों के द्वारा तैयार किया गया था, जो धार्मिक समस्याओं को समाधान करने और झूठी शिक्षा के विरुद्ध खड़े होने को निर्मित किए गए थे। कलीसियाई परिषदों के द्वारा निर्मित किए गए विश्वासवचन या धर्मसिद्धान्त को सभी मसीहियों के ऊपर आधिकारिक और बाध्यकारी माना जाता था,

क्योंकि कलीसिया ने आधिकारिक तौर पर उनकी पुष्टि की थी। धर्मसिद्धान्तात्मक धर्मविज्ञान के प्रयोजनों में से एक कलीसियाई देह को धर्मसिद्धान्त बनाने और संवाद स्थापित करने के लिए सक्षम करना है, जो मसीही विश्वास के लिए आवश्यक माना जाता है, और यदि इनका इनकार कर दिया जाए, तो यह झूठा बन जाएगा।

धर्मसिद्धान्तात्मक धर्मविज्ञान का कभी-कभी विधिवत् धर्मविज्ञान के साथ भ्रम उत्पन्न हो जाता है, और दोनों शब्दों को कभी-कभी एक दूसरे के लिए उपयोग किया जाता है। यद्यपि, दोनों के मध्य में संक्षिप्त परन्तु महत्वपूर्ण अन्तर पाया जाता है। विधिवत् धर्मविज्ञान और धर्मसिद्धान्तात्मक धर्मविज्ञान के मध्य पाए जाने वाले अन्तर को समझने के लिए, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि शब्द "धर्मशिक्षा" न केवल पवित्रशास्त्र के कथन, अपितु उन कथनों की कलीसियाई, आधिकारिक पुष्टि पर बल देता है। विधिवत् धर्मविज्ञान और धर्मसिद्धान्तात्मक धर्मविज्ञान के मध्य मौलिक अन्तर यह है कि विधिवत् धर्मविज्ञान के लिए कलीसिया देह या कलीसिया से आधिकारिक अनुमति या अनुमोदन की आवश्यकता नहीं है, जबकि धर्मसिद्धान्तात्मक धर्मविज्ञान सीधे रूप में किसी विशेष कलीसियाई देह या सम्प्रदाय से जुड़ा हुआ होता है। धर्मसिद्धान्तात्मक धर्मविज्ञान सामान्य रूप से एक ही जैसे धर्मसिद्धान्तों पर चर्चा करता है, और अक्सर विधिवत् धर्मविज्ञान के रूप में समान रूपरेखा और संरचना का उपयोग करता है, परन्तु एक विशेष सम्प्रदाय या कलीसिया से सम्बद्ध एक विशेष धर्मसैद्धान्तिक दृष्टिकोण के द्वारा ऐसा करता है।

स्रोत / Source: <https://www.gotquestions.org/Hindi/Hindi-dogmatic-theology.html> | English: <https://www.gotquestions.org/dogmatic-theology.html>

www.GotQuestions.org · <https://www.gotquestions.org/Hindi> · © Copyright
Got Questions Ministries · questions@gotquestions.org